# जीवित यात्रा

"अरे डॉक्टर साहब आप फिक्र मत कीजिए, मैं कुछ ही दिन केलिए हरियाणा जा रहा हूँ। दस दिन बाद मैं ~~मव~~ वापस इंस्टिट्यूषन ~~आ~~ ही आऊँगा। मुझे पता है कि वहाँ बहुत सारे बच्चे अड्मिषन केलिए आ रहे हैं... मैंने सबी का इंतज़ाम किया है। सब ठीक-ठाक होगा। मैं गाँव पहूँचकर आपको कोल ~~करता हूँ~~ करूँगा। ठीक है।" ~~संजीव~~ रमेश ~~रेल~~ फोण रखकर रेलगाड़ी का सफ़र ज़ारी करने लगे। तभी एक बूढ़ा आदमी उसके पास आकर बैठा और वह उससे पूछ-ताछ की। "आप दिल्ली मैं क्या काम करते हो?" आदमी ने पूछा। "मैं तो वहा एक ~~डॉ~~ मेडिकल कोलेज के मैनेजर हूँ, कुछ दिनों केलिए गाँव ~~आया हूँ~~ जा रहा हूँ।" रमेश के बातें सुनकर वह हैरान हो गया और वह आपस मैं बात करते रहे। ~~दो~~ दोनों बात करते-करते हरियाणा ~~फ~~ पहूँच गया।

उस बूढे आदमी से अलविदा कहकर वह कुछ दूर चलने लगे। तभी उसके नज़र में एक लड़का नज़र आया। वह ~~ज़मीन में~~ चाँद के रोशनी में ज़मीन पर बैठकर फूल बेच रहे ~~थ~~ थे। उस लड़के का चेहरा ~~बिल्क~~ बिलकुल वह फूल जैसा था - मुरझाया और सुंदर। रमेश धीरे-धीरे उसके ~~पास~~ ओर चलने लगे। करीब सोलह साल का लड़का इस गहरी ठंड में काँपते हुए फूल क्यू बेचता होगा ? रमेश के मन सन्नाटे से भर गया। वह बरदाश्त न कर सका, फौरन लड़के से पूछा "तुम इस ठंडी मौसम में फूल क्यू बेच रहे हो, वो भी इतनी रात। बारा बज गए है।" लड़के ने मुस्कुराते हुए कहा, "हम जैसे गरीब लोगों को रात में काम करना एक मामूली सी बात है। मैं सालों से यह काम कर रहा हूँ। रमेश ~~ने~~ अश्चर्य से पूछा, "लेकिन क्यूँ ? तुम्हारे घर में और कोई नहीं है क्या ?" "नहीं, मैं मेरे माँ-बाप एक एकसिडन्ट में चला गया... करीब सात साल पेहले।

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 952 Participant Code: 324

तबसे मैं लोगों के घरों में काम करकर और फूल बेचकर अपने लिए रोटी खरीद रही हूँ।" उसके चेहरे में ~~तभी~~ भी एक ~~मुक~~ मुस्कान थी। रमेश ने पूछा, "तब तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है?"

"मैं दिन में स्कूल जाकर ~~सत~~ शाम में काम करता हूँ।" रमेश के आँखों में आँसू जम गए और वह पूछना जारी किया। राजू के माँ-बाप काम करने केलिए हरियाना आया था। उनके जाने के बाद राजू बहुत दुखी और परेशान हो गये। दिन भर की सूखे रोटी केलिए वह दूसरों से भीग माँगता था। लेकिन लोगों ने उसका मज़ाक उड़ाया और भगा लिया। वह बहुत शर्मिंदा महसूस करने लगे और तब से एक-एक घर में जाकर साफ़-सफ़ाई और आदी चोटे ~~ब~~-चोटे काम करने लगे। वह कयी जगहों से फूल इकट्टा करकर बेचने लगे। उससे मिले दाम से वह अपने पढ़ाई शुरू किया। रमेश ने उसके पास बैठकर पूँचा "अरे राजू तुम आगे क्या पढना

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

Page No:

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 952 Participant Code: 324

चाहते हो ? तुम्हारा मकसद क्या है ?" राजू ने हँसते हुए कहा, "सर, मुझे डॉक्टर बनना है, सभी देशवासियों की देखभाल करना है।" उसके आँखों में दिखे चमक तारों से भी ज्यादा था। रमेश ने कहा, "क्या तुम मेरे साथ चलना चाहोगे, मैं दिल्ली में एक मशहूर मेडिकल कोलेज के मानेजर हूँ। अगर तुम मेरे साथ चलोगे तो मैं वहा तुम्हें पढ़ाऊँगा, उसकेलिए चाहे जितने भी कठिनाई सामना करने पड़े।" राजू को अपने आप भरोसा नहीं आया। उसके दिल बहुत तेज़ी से धड़कने लगे। "वह हैरान होकर कहा, "क्या आप सच कह रहे हैं... झूठ मत बोलिए।" "नहीं राजू, मैं तो सच कह रहा हूँ। तुम तो परीक्षा में बहुत ऊँची मार्क्स में पास होगये हो और पढ़ने में बहुत होशियार भी हो, तुम्हें आगे पढ़ने केलिए ज़रूर स्कोलर्षिप मिलेगा। मैंने अधिकारियों बात किया है, तुम ज़रूर डॉक्टर बनोगे।" राजू के आँखों से आँसू

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

Page No:

बहने लगा, वह चीखकर रमेश को गले लगाया। रमेश दो दिनों में राजू के अदमिषन का और दिल्ली जाने का पूरा इंतज़ाम किया। वह अपने चुट्टी लेकर राजू के साथ दिल्ली जानेवाली रैलगाडी ~~पर~~ अपना सफ़र शुरू किया। राजू की सारी हिम्मत कम होते जा रही थी। परेशान होकर उसके पसीने ~~च~~ नदि की तरह बेह रहे थे। वह खबराते हुए खुत से ही पूँछा, "क्या मैं यह कर पाऊँगा, क्या मुझे डॉकटर बनने की नियती होगा? दिल्ली के लोग ज़रूर मुझसे नफ़रत करेंगे। हे भगवान ~~उ~~ अब मैं क्या करू...।" रमेश और राजू को साथ देखकर वह बूढा आदमी फिर ~~उ~~ रमेश के पास आया। "अरे रमेश जी, क्या मुझे याद आया?" रमेश ने खुशी से कहा, "हाँ ज़रूर, आप कैसे हैं?" आदमी ने बोला, "मैं तो ठीक हूँ, यह लड़का आप के साथ कहा जा रहे हैं?" रमेश हैरान होकर कहा, "क्या आप इसे जानते हैं, मैं इसे आगे पढने केलिए

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

63-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2025 ജനുവരി 4 മുതൽ 8 വരെ തിരുവനന്തപുരം

Item Code: 952 Participant Code: 324

दिल्ली लेकर जा रहा हूँ।" वह हँसते हुए कहा, "आप यह क्या कह रहे हैं, यह कीचड़ का लड़का... पढ़ने केलिए... आप शायद इसे ठीक से जानते नहीं।" यह सुनकर राजू को बहुत बुरा लगा, वह सर झुककर खुद शर्मिंदा महसूस कर रहे थे। तभी एक पटाके की तरह रमेश ने बोला, "मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ। पढ़ने-लिखने केलिए जाती, वर्ण या गरीबी कोई प्रश्न नहीं है। कामियाब होने केलिए हिम्मत और परिश्रम की ज़रूरत है। राजू को वह दोनों है। आप देखना इस यात्रा के अंत में राजू की ज़िंदगी बदल जाएगी और वह डॉक्टर बनकर सबी को के इलाज करेंगे।" रमेश के इन बातें सुनकर राजू को आत्मविश्वास प्राप्त हुआ और वह निश्चय किया की चाहे जो बी हो वह डॉक्टर बनके ही वापस आऊँगा। राजू के ज़िंदगी बदलने वाली यह यात्रा बहुत प्रतीक्षाओं से ज़ारी है...।